Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

हिंदी चित्रपट संगीत में 1950 के दशक की सुरीली आवाज़ेः महिला पार्श्व गायिकाओं के संदर्भ में

PARUL SHARMA[1] & DR.ASHOK KUMAR SHARMA[2]

1 Research Scholar (Ph.D), Department of Music&Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra
2 Assistant Professor, Department of Music&Dance, Kurukshetra University, Kurukshetra

सार

भारतीय चित्रपट संगीत कभी भी एक विषेश शैली या पद्धति में बंधकर नहीं रहा। स्वीकार्यता तथा परिवर्तनषीलता इसकी विशिश्टताएँ रही हैं। आरंभिक दौर में शास्त्रीय संगीत के रूप में बह कर प्रारंभ करने वाली इस चित्रपट संगीत की धारा में कभी नाट्य संगीत, लोक संगीत तो कभी पाष्चात्य संगीत की धाराएँ भी समाहित होती रही हैं। भारतीय संगीत ने सभी को अपने अंदर समेटा है और समय-समय पर अपना रूप परिवर्तित किया है। उदारता और सहनषीलता की इस प्रवृत्ति ने ही, हिंदी चित्रपट संगीत को गुणवत्ता और लोकप्रियता के शिखर पर पहुँचा दिया। चित्रपट संगीत के इस प्रारंभिक दौर में प्रत्यक्ष गायन परंपरा का प्रचलन था लेकिन धीरे-धीरे अप्रत्यक्ष गायन परंपरा का दौर षुरू हो गया और बहुत से पुरूश गायक कलाकारों के साथ महिला गायिकाओं का भी उदय हुआ। समय के साथ-साथ कुछ आवाजें तो लुप्त हो गई लेकिन कुछ प्रमुख गायिकाओं की आवाज़ और उनके द्वारा गाए गए गीतों की गूंज आज भी हमारे जहन में समाई हुई हैं। चित्रपट संगीत ने आज जो मुकाम हासिल किया है उसके पीछे चित्रपटों से जुड़े सभी कलाकारों की मेहनत हैं चाहे वह चित्रपट निर्माता, अभिनेता-अभिनेत्री, संगीत निर्देशक या गायक हो, इन सभी की मदद से आज चित्रपट संगीत सबसे ज्यादा मनोरंजक है, जिनके गीत आज भी जब कभी संगीत प्रेमी सुनते हैं तो उनके मन को एक सुकून मिलता है, परम आनंद की अनुभूति होती है और वे गीत हमें स्मृतियों के जंगल में अपने साथ बहुत दूर ले जाते हैं। क्योंकि पहले पार्श्व गायन हेतु जो संगीत तैयार किया जाता था, उनका शब्द विन्यास संगीत योजना और उसमें प्रयुक्त होने वाले वाद्ययंत्र ज्यादातर भारतीय होते थे, जिनसे भारतीय जनमानस का विषेश लगाव होना स्वाभाविक था। 1950 के दशक को हिंदी चित्रपट संगीत का स्वर्ण युग कहा गया हैं क्योंकि इस दशक में ऐसी महान गायिकाओं ने चित्रपट जगत में प्रवेश किया जिन्होंने अपने गीत-संगीत से चित्रपट जगत को ही नहीं बल्कि संपूर्ण जगत के प्राणियों को भी प्रभावित किया। जिनमें शमशाद बेगम, सुरैया, लता मंगेशकर, गीतादत्त, और आशा भोंसले प्रमुख हैं।

उद्देश्यः-1950 के दशक की प्रमुख पार्श्व गायिकाओं का हिंदी चित्रपट संगीत में योगदान को जानना।

अनुसंधान विधिः- सर्वेक्षणात्मक शोध पद्धति का प्रयोग किया गया है।

मुख्य बिंदुः- शमशाद बेगम, सुरैया, लता मंगेशकर, गीतादत्त, आशा भोंसले।

भूमिका

चित्रपट संगीत एक ऐसी कला हैं जिसमें नाट्य और संगीत दोनों ही सम्माहित है, जिसकी शुरूआत वर्ष 1931 में बोलते चित्रपटों के आगमन से हुई यद्यपि जिस समय मूक चित्रपट बनाई जाती थी उस समय भी मंच के सामने हारमोनियम और कई अन्य वाद्ययंत्र बजाए जाते थे पर सवाक् चित्रपटों के आने से संगीत साकार रूप से चित्रपटों का हिस्सा बन गया। बोलते चित्रपटों के निर्माण के साथ ही चित्रपटों में गायन लगभग आवश्यक समझा जाने लगा था क्योंकि उस समय प्रत्यक्ष गायन का प्रचलन था तो अभिनेता-अभिनेत्रियों को अपने पर फिल्माएं हुए गीत स्वयं ही गाने पड़ते थे जिस दौरान बहुत सी कठिनाईयों का सामना करना पड़ता था, जिसके चलते निर्माता निर्देशक नितिन बोस ने पार्श्व गायन को अंजाम देने की सोची और वर्ष 1935 में हिंदी चित्रपट 'धूपछाँव' में संगीत निर्देशक आर.सी.बोराल के साथ मिलकर पार्श्व गायन परंपरा का शुभारंभ किया, जिसमें बहुत से पुरुष गायकों के साथ-साथ महिला पार्श्व गायिकाओं ने प्रवेश किया और युगानूसार इस परंपरा को निभाया। चित्रपट जगत में अविस्मरणीय योगदान देकर चित्रपटों में गायन को उच्च

शिखर पर पहुंचा दिया। हम भाग्यशाली है कि हमारे हिंदी चित्रपटों में शास्त्रीय संगीत के ज्ञाता मर्मज्ञ संगीतकार और गायक-गायिकाएँ हुई है, जिन्होंने संगीत की गरिमा को चित्रपट संगीत के माध्यम से बनाएं रखा और जनसाधारण के सम्मुख ऐसा चित्ताकर्शक संगीत प्रस्तुत किया कि आज संपूर्ण विष्व संगीतमय हो गया।

शमशाद बेगम

शमशाद बेगम अपने अनोखे स्वर सौन्दर्य से मंत्र मुग्ध करने वाली हिन्दुस्तान की सुनहरी पहचान है, जिन्होंने चित्रपट जगत में गायिका के रूप में वर्श 1941 में प्रवेश किया और अपनी नुकीली आवाज़ में 1950 से 1970 के दशक तक एक से एक सुरीले और मधुर गीत गाए और संगीत जगत में अपनी एक ऐसी पहचान बनाई जिसे आज तक भुलाया नहीं जा सकता। उन्होंने अपनी संगीत की शिक्षा सुप्रसिद्ध सांरगी वादक 'उ. हुसैन बख़्श' से प्राप्त की। उन्होंने दिल्ली में स्थित 'दि क्राउन इम्पीरियल थियेट्रीकल कंपनी ऑफ परफार्मिंग आर्ट्स' के माध्यम से बहुत कम उम्र में मंच पर व 'आल इंडिया रेडियो' के माध्यम से संगीत के क्षेत्र में अपनी जगह बनाई। उन्हें संगीत के प्रति आकर्शण हुआ ग्रामोफोन की आवाज़ से। वह तन्मय होकर ग्रामोफोन सुनती और फिर अपनी आवाज़ में उस गीत को गुनगुनाती। यही उनका रियाज़ और साधना थी।1 हिंदी चित्रपटों में पार्श्व गायन की षुरूवात उन्होंने गुलाम हैदर की संगीत निर्देशित चित्रपट 'खजांची' (1941) से की।

इस चित्रपट में कुल नौ गीत थे और सभी गीत शमशाद की सुरीली आवाज़ में रिकोर्ड हुए। चित्रपट के कुछ गीत काफी लोकप्रिय हुए थे - 'सावन के नज़ारे हैं, 'एक कली नाजों से पली' आदि। इस चित्रपट ने भारत भर में सफलता के नये रेकार्ड कायम किये। खजांची के बाद अगले वर्ष चित्रपट 'खानदान' आई इसके संगीत निर्देशक भी गुलाम हैदर थे इसमें उन्होंने दो दोहरे गीत गाए गायिका-अभिनेत्री नूरजहाँ के साथ एक 'पीले-पीले मोरे राजा', और दूसरा 'चलो पनिया भरन को चले' उस समय बहुत पसंद किये गए। शमशाद ने उस समय के अनेक संगीत-निर्देशकों के निर्देशन में गीत गाए जिनमें गुलाम हैदर का नाम प्रथम स्थान पर आता हैं क्योंकि सर्वप्रथम गुलाम हैदर ने ही शमशाद को चित्रपटों में गाने का मौका दिया। अतः उनकी सफलता के पीछे संगीतकार गुलाम हैदर का बहुत बड़ा योगदान है यह हम कह सकते हैं। इनके अलावा नौशाद, ओ. पी. नैय्यर, रवि शर्मा,सी. रामचंद्र, एस. डी. बर्मन, खेमचंद्र प्रकाश, आदि के नाम प्रमुख है।[2] चितलकर रामचंद्र की संगीत निर्देशित तीन चित्रपटों 'शहनाई', 'पतंगा' औरइ 'नमूना' में शमशाद ने गीत गाए।

शमशाद की आवाज़ का सबसे अधिक प्रयोग संगीतकार नौशाद ने किया। नौशाद के संगीत निर्देशित दस चित्रपटों में उन्होंने गीत गाए। दर्द (1947), अनोखी अदा, मेला (1948), बाबुल (1950), ज़ादू, दीदार (1951), आन (1952), नगमा (1953), मदर इंडिया (1957), मुगल-ए-आज़म (1960) आदि। मेला चित्रपट में वह प्रमुख गायिका थीं क्योंकि इस चित्रपट में उनके द्वारा गाए आठ गीत थे जिनमें से 'धरती को आकाश पुकारे', 'आई ऋतु आई' और बाबुल चित्रपट में उनका गाया विदाई गीत 'छोड़ बाबुल का घर' तथा 'मिलते ही आँखे दिल हुआ दिवाना' ये सभी गीत आज भी संगीत श्रोताओं को लुभाते हैं।

नौशाद के बाद ओ.पी.नैय्यर ने शमशाद की आवाज़ का सबसे ज्यादा उपयोग किया। संगीतकार ओ.पी.नैय्यर के संगीत से सजी लगभग आठ चित्रपटों में उन्होंने गीत गाए। आर-पार (1954), मिस्टर एण्ड मिसिज़ 55 (1955), सी.आई.डी (1956), नया दौर, कैदी (1957), हावड़ा ब्रिज (1958), जाली नोट (1960), किस्मत (1968) आदि।

उक्त संगीत निर्देशकों के अतिरिक्त उन्होंने बहुत से अन्य लोकप्रिय संगीतकारों के निर्देशन में गीत गाएं जैसे:-लक्ष्मीकांत -प्यारेलाल संगीतबद्ध 'डाकु मंगल सिंह'(1966), 'आया होली का त्योहार लेके रंगो की बहार' (होली गीत/मो. रफ़ी के साथ)। कल्याण जी-आनंद जी चित्रपट 'उपकार'(1967), 'आई झूम के बसंत झूमो संग-संग में'(मौसमी गीत /सूंदर, आशा, मन्नाडे, महेंद्र कपूर के साथ), खेमचंद्र प्रकाश चित्रपट 'सावन आया रे' (1949) इसमें उन्होंने पाँच गीत गाए (चार एकल और एक युगल गीत/ मो. रफी के साथ) 'नहीं फरियाद करते हम', मदन मोहन, चित्रपट 'हीर रांझा'(1970) इस चित्रपट में गाया उनका एक दोहरा गीत 'नाचे अंग वे छलके रंग वे' (विवाह गीत/जगजीत कौर के साथ), हुस्नलाल-भगतराम, चित्रपट 'सनम' (1951) इसमें इन्होंने शमशाद से चार गीत गवाए (एक एकल/एक दोहरा गीत/दो समूह गीत), 'दिल ले गया जी कोई'(पंजाबी लोकगीत/सुरैया के साथ), आबिद हुसैन खां और सुषांत बेनर्जी की संगीत निर्देशित फ़िल्म 'लास्ट मैसेज़'(1949) में उन्होंने पाँच गीत गाए (तीन एकल/ दो युगल/विनोद के साथ), षंकर-जयकिशन, चित्रपट 'आवारा'(1951) में एक गीत गाया। एस.एन. त्रिपाठी और चित्रगुप्त के संगीत निर्देकशत चित्रपट 'अली बाबा चालीस चोर'(1954) में पाँच गीत गाए (तीन एकल/दो युगल /मो.रफ़ी के साथ) इत्यादि। शमशाद बेगम ने लगभग सभी नामी संगीत निर्देशकों की धुनों पर गाया हैं। संगीतकार परदेसी के संगीत से सजी चित्रपट 'बाँकेलाल' (1972) में उन्होंने आखिरी बार गाया -'हम किससे कहें क्या शिकवा करें' (आशा भोंसले के साथ)। जिन चित्रपटों में उन्होंने सबसे ज्यादा गीत गाए उनमें:- 'खजाची' 9 गीत (8 एकल /1 युगल/गुलाम हैदर के साथ), 'तकदीर' 9 गीत (4 एकल/1 दोहरा/ नूरजहाँ के साथ/ 4 युगल/मोतीलाल के साथ), 'आ'' 6 गीत (3एकल/3 युगल /2 मो. रफी और 1 शैलेश के साथ), 'मेला' 8 गीत (4 एकल/ 4 युगल/ मुकेश के साथ), 'पतंगा' 7 गीत (2 एकल/4 युगल/2 सी.रामचंद्र और 1 मो. रफी के साथ/ 1 समुह गीत), 'शबनम' 7 गीत (4 एकल/ 3 युगल/मुकेश के साथ), 'बाबुल' 8 गीत (3 एकल/ 3 युगल/2 तलत और 1 लता के साथ/2 समुह गीत), 'बहार' 6 गीत (एकल) इत्यादि प्रमुख हैं।

शमशाद भी अन्य समकालीन गायिकाओं की तरह खुले कंठ से गाने वाली गायिकाओं में थी। उनकी आवाज में एक भारी पन था जो सुनने में बहुत ही मधुर लगता था। उनकी मर्दाना आवाज़ में एक विशिष्ट सुरीलापन था, जो उन्हें अन्य गायिकाओं से अलग करता था। इनके सभी गीत अपना एक विषेश मुकाम रखते थे, जिनको शब्दों में बांधा नहीं जा सकता। उन्होंने हिंदी चित्रपटों में अपने 32 साल (1941-1972) के सांगीतिक सफ़र में हज़ारों गीतों को अपने स्वरों से सजाया हैं। हिंदी फ़िल्मों के अलावा उन्होंने अन्य भाषाओं में भी गीत गाए हैं जैसेः- पंजाबी, बंगाली, मराठी, गुजराती, तमिल आदि। संगीत के क्षेत्र में अतुलनीय योगदान के लिए शमशाद बेगम को 2009 में भारत सरकार द्वारा 'पदम भूषण' पुरस्कार से भी नवाज़ा गया हैं। 23 अप्रैल, 2013 ये इस दुनियां को छोड़कर कर चली गई।[3]

सुरैया ज़माल

सुरैया ज़माल शेख़ उर्फ़ सुरैया जिन्हें चित्रपट जगत में बतौर नायिका-गायिका के रूप में जाना जाता है, का जन्म 15 जून, 1929 को पाकिस्तान के लाहौर शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम 'अज़ीज ज़माल शेख और माता का नाम 'बेगम मुमताज़ मलिका' था सुरैया ने अल्पावस्था में ही संगीत तथा अभिनय की दुनियां में प्रवेश कर लिया था। बेबी सुरैया ने अपनी शोख, चंचल और मासूम अदाकारी व गायकी से चित्रपट जगत की दो दशकों तक सेवा की। 1950 व 1960 के दशक में चित्रपट उद्योग में उनके सौन्दर्य और गायन की जो गूंज थी, वह आज भी दर्शकों के ज़हन में है।[4]

जब वे मात्र ग्यारह वर्ष की थीं तब एक बार अपने चाचा 'अता शहूर शेख़' और अपने समय के प्रसिद्ध खलनायक मामा 'ज़हूर शेख़' के साथ मोहन स्टूडियों में निर्माणाधीन चित्रपट 'ताजमहल' 1941 के सेट पर गई, तो चित्रपट निर्देशक

नानूभाई वकील ने उन्हें पसंद कर लिया और मुमताज के बचपन का किरदार निभाने का मौका दिया। इस प्रकार अनायास ही उनका चित्रपटों में प्रवेश हो गया। वैसे, सुरैया की पहली फ़िल्म दर्शकों ने देखी 'हमारी बात' 1943। इसके पश्चात् वह संगीतमयी फ़िल्मों की पर्याय बन गई। फूल, सम्राट चंद्रगुप्त, अनमोल घड़ी, दर्द, दिवाना, और 1857 इन सभी संगीतमयी चित्रपटों में सुरैया ने कई कर्णप्रिय गीत गाए, और लोकप्रियता हासिल की।[5]

सुरैया की प्रतिभा को देखकर बाम्बे टाकीज़ ने उन्हें पांच सौ रुपये प्रतिमाह वेतन पर स्थाई रूप से अपने यहां रख लिया। बाम्बे टाकीज़ की फ़िल्म 'हमारी बात' 1943 में अभिनय के साथ उन्होंने दो नृत्य भी प्रस्तुत किये थे और इसी फ़िल्म में उन्होंने तीन युगल गीत भी गाए। इस चित्रपट का एक गीत 'बिस्तर बिछा दिया है' पुराने संगीत श्रोता अभी तक नहीं भूल पाएं है। उन दिनों सुरैया की तुलना नूरजहां से जरूर की जाती रही है। किन्तु देश विभाजन के बाद जब वह पाकिस्तान चली गई तो सुरैया चित्रपट जगत की सम्राज्ञी बन बैठी और उनके कदम शिखर की और अविराम बढ़ते चले गए। मगर गीतों की गहनता और मधुरता का अगर पैमाना माना जाए तो सुरैया का एक विशिष्ट स्थान था। इसका कारण यह था कि उनकी आवाज़ में सहजता, लोकसंगीत और शास्त्रीयता का ऐसा अदभुत संगम था जो उस ज़माने की किसी गायिका में नहीं था। गीतादत्त, शमशाद बेगम, काननबाला, अमीरबाई कर्नाटकी के खनखनाते तरानों पर झूमते जमाने में यह एक ऐसा स्वर था जिसका जादू कभी नहीं उतरा। सुरैया की अधिकत्तर फ़िल्में उनके स्वर माधुर्य के कारण लोकप्रिय हुई। उनकी आवाज़ में वास्तव में एक अजब सी मिठास थी। वर्ष 1945 से 1955 तक वे लोकप्रियता की चोटी पर बनीं रहीं। इस दौरान उनके एक से बढ़कर एक मधुर एंव सुरीले गीत भी सामने आते रहें।[6] जिसका विवरण इस प्रकार हैं।

सुरैया ने युगल गीतों की अपेक्षा एकल गीत ज्यादा गाए हैं और कुछ फिल्मों में यह प्रमुख गायिका के रूप में भी उभर कर सामने आई हैं। जैसे-डाक बंगला, दिल्लगी, नीली, शमां परवाना, जीत ओर बालम आदि। इस प्रकार सुरैया ने अनिल विष्वास,बुलो सी रानी, हुस्नलाल भगतराम, हंसराज बहल, सज्जाद हुसैन, नौशाद, एस.डी.बर्मन जैसे संगीतकारों की धुनों पर गाकर उन्होंने चित्रपट जगत की दुनियाँ में तहलका मचा दिया। ज्यादातर सुरैया ने हुस्नलाल भगतराम के संगीत से सजी 8-9 चित्रपटों में गीत गाऐ।

1950 में सुरैया को वर्ष की सर्वश्रेश्ठ अभिनेत्री घोशित किया गया। सोहराब मोदी द्वारा निर्मित तथा राष्ट्पति द्वारा पुरस्कृत फ़िल्म 'मिर्जा गालिब'(1954) में सुरैया के स्वर तथा अभिनय ने कमाल कर दिया था। इस चित्रपट में सुरैया की श्रेष्ठ गायकी से प्रभावित होकर पंडित जवाहरलाल नेहरू ने कहा था 'कि तुमने तो वाकई गालिब की रूह को जिंदा कर दिया।' इस चित्रपट ने सुरैया जी को 'बुलबुले हज़ार दास्तान' की संज्ञा दिलवाई। सुरैया ने अपने 22 वर्षो के सांगीतिक सफ़र में लगभग 68 चित्रपटों में 300 के करीब गाने गाए है। उन्होंने अधिकतर स्वयं पर फिल्माएं हुऐ गीत गाएं है केवल एक गीत को छोड़ कर। चित्रपट 'शमा' का गीत, 'धड़कते दिल की तमन्ना हो'' ये उनके साथ अभिनेत्री निम्मी पर भी फ़िल्माया गया था। शास्त्रीय संगीत में सुरैया प्रवीण नहीं थी लेकिन अपने गायन की सीमा को ध्यान में रखते हुए वो धुनों के साथ न्याय करती थी। उनके अभिनय व गायन की आखिरी फ़िल्म 'रुस्तम सोहराब'(1963) थी। इसमें उन्होंने संगीतकार सज्जाद के निर्देशन में एक एकल गीत' ये कैसी अजब दासतां हो गई'' गाया था। 'सुरैया ने यह एक मात्र रंगीन फ़िल्म की थी अन्यथा उनकी सारी फ़िल्में श्वेत-श्याम ही रही'। उनका निधन 31 जनवरी, 2004 को प्रातः 9:25 पर मुंबई के हरिकिशन दास अस्पताल में लम्बी बीमारी के कारण हुआ। लेकिन यह आज भी अपने दर्द भरे और भावपूर्ण गीतों के लिए हमेशा याद की जाती रहेगी।[7]

लता मंगेशकर

लता मंगेशकर ने किसी हिंदी चित्रपट के लिए पहला गीत 'बड़ी माँ' (1945) में गाया था। जिसके बोल थे- 'माता तेरे चरणों में गुजर जाए उमरिया' यह गीत एक सहगान के रूप में था इस गीत में लता मंगेशकर द्वारा गाई पंक्तियों को उन्हीं पर फ़िल्माया गया था अर्थात् अपनी पहली फ़िल्म में लता जी ने साभिनय गायन किया था। इसके अगले वर्ष 1946 में मास्टर विनायक की 'सुभद्रा' चित्रपट में संगीत निर्देशक वसंत देसाई ने लता को तीन गीत गाने और अभिनय करने का मौका मिला। इस चित्रपट में उन्हें एक कोरस गीत (शान्ता आप्टे के साथ) और दो एकल गीत गाए। एकल गीत हैं- 'पिया आयेगा' और 'सांवरिया हो'। अब तक लता अभिनय और गायन इन दोनों क्षेत्रों में अपने पैर जमाने की कोशिश कर रही थी। उन्होंने पार्श्वगायिका के रूप में अपनी नई और मैराथन पारी की षुरुवात की वर्ष 1947 में। पार्श्वगायन करते हुए उन्होंने पहली बार चित्रपट 'आपकी सेवा में' के लिए संगीतकार दत्ता डावजेकर के निर्देशन में प्रसिद्ध अभिनेता महिपाल की लिखी ठुमरी गाई थी-'पा लागूँ कर जोरी रे'।[8] लेकिन लता को प्रसिद्धि, सफलता और पहचान चित्रपट 'महल' (1949) के राग यमन कल्याण के स्वरों पर आधारित गीत 'आएगा आने वाला' से मिली। जो संगीतकार खेमचंद्र प्रकाश ने संगीतबद्ध किया था। इस गीत ने रिकार्ड बिक्री के कई कीर्तिमान तोड़े। लगभग सात मिनट लम्बे इस गीत के माध्यम से लता की आवाज़ ने देश को चमत्कृत करके रख दिया। उनके स्वरों की जादू भरी कशिश को पहली बार इस गीत ने उभारा था।

'महल' के साथ-साथ इसी वर्ष प्रदर्षित 'बरसात' और 'अंदाज़' के गीतों ने भी लता को पार्श्वगायन के क्षेत्र में बुलंदियों तक पहुँचा दिया। 'बरसात' चित्रपट में गाए उनके गीत 'हवा में उड़ता जाए मेरा लाल दुपट्टा', मेरी आँखों में बस गया कोई रे' (राग पहाड़ी), 'बरसात में हमसे मिले तुम साजन'(राग भैरवी) और अंदाज चित्रपट में नौशाद साहब के संगीत निर्देशन में गाया उनका राग केदार के स्वरों पर आधारित गीत 'उठाए जा उनके सितम' आदि गीत न केवल लोकप्रिय हुए बल्कि उन्होंने लता की आवाज़ को घर-घर में पहुँचा दिया। नूरजहाँ की पाकिस्तान जाने से हुई रिक्तिता को अब लता ने भर दिया था। इन चित्रपटों ने यह संकेत दे दिया था कि आने वाला समय लता मंगेशकर का है। यह एक खुबसूरत संयोग था कि लता के गाए गीतों की उक्त तीनों चित्रपट एक ही वर्श में प्रदर्षित हुईं और उनके गीतों ने जबरदस्त धूम मचाई जिससे लता की लोकप्रियता का ग्राफ तेजी से ऊपर चढ़ता चला गया और पार्श्वगायन के क्षेत्र में पाँव रखने के दो साल के भीतर ही उनका नाम पूरे देश में जाना-पहचाना बन गया।[9]

इसके बाद लता जी के पास काम की कमी नहीं रही उन्हें एक के बाद एक चित्रपटों में गाने के मौके मिलने लगे और वह धीरे-धीरे सभी संगीतकारों की पसंदीदा गायिका बनने लगीं। कुछ प्रसिद्ध शास्त्रीय संगीत पर आधारित चित्रपट जिसे लता ने अपने स्वरों से सजाया, जिसका विवरण इस प्रकार हैं-

बैजू बावरा (1952)-यह चित्रपट पूर्णतः शास्त्रीय संगीत पर आधारित हैं जिसे संगीतकार नौशाद ने अपने संगीत से सजाया था इस चित्रपट में नौशाद जी ने लता जी से दो एकल और एक युगल गीत गवाए। गीत के बोल हैं:- 'मोहे भूल गये सांवरिया'(राग भैरव), 'बचपन की महोब्बत को'(राग माण्ड), युगल गीत के बोल हैं- 'तू गंगा की मौज'(राग भैरवी/साथी मोहम्मद रफ़ी)। इसके बाद 'अनारकली'(1953) चित्रपट में लता के गाए गीत 'महोब्बत ऐसी धड़कन हैं'(रागेशवरी) और 'जाग दर्द ए इश्क जाग'(बागेशवरी/हेंमत कुमार के साथ) सभी गीत लोकप्रिय रहें।

झनक-झनक पायल बाजे(1955)- संगीतकार बसंत देसाई के संगीत निर्देशन में बना यह एक अमर चित्रपट हैं जिसमें शास्त्रीय संगीत का सुंदर प्रयोग किया गया हैं। इस में उन्हें कुल 8 गीत (चार एकल/चार युगल) गाने का मौका मिला। गीत हैं- 'नैन से नैन नाहिं मिलावो'(राग अड़ाना), 'जो तुम तोड़ो पिया'(एकल), 'मेरे ए दिल बता'(राग भैरवी/ मन्ना डे), 'सैंया जावो'(राग देस), 'कैसी ये महोब्बत की सजा'(मिश्र खमाज़), 'सुनो सुनो सुनो जी'(खमाज़) और 'मुरली मनोहर'(राग पीलू/ मन्ना डे के साथ)।

स्वर्ण सुंदरी(1958):- श्री आदिनारायण राव के संगीत निर्देशन में बने इस चित्रपट में लता जी ने चार गीत (एक एकल/ दो युगल/एक समुह) गाएं। जो इस प्रकार हैं- 'शम्भु सुन मेरी पुकार' (राग चंद्रकौंस), 'कुहू कुहू बोले कोयलिया' (राग सोहनी/मो.रफ़ी के साथ), 'जा रे नटखट पिया' (मालकौंस/सुधा मल्होत्रा के साथ), 'गिरिजा संग है'(राग भीमपलासी/अन्य साथियों के साथ)।[10]

गूँज उठी शहनाई(1959):- यह चित्रपट सर्वश्री बसंत देसाई के संगीत निर्देशन में तैयार किया गया हैं। इस चित्रपट में स्वर सम्राट बिस्मिल्लाह खाँ की शहनाई का सुंदर प्रयोग किया गया हैं और सुश्री लता मंगेशकर ने इसमें पाँच गीत(एक एकल/ तीन युगल/ एक समुह गान) गाएं हैं जिनके बोल हैं- 'तेरे सुर और मेरे गीत'(राग बिहाग), 'दिल का खिलौना हाय', 'जीवन में पिया तेरा'(रफ़ी के साथ/ राग भैरवी), 'तेरी शहनाई बोले'(रफी जी के साथ/ राग शिवरंजनी) और 'हौले हौले घूंघट के पट खोले'(मो. रफी और अन्य साथी /राग बिलावल)।

मुग़ल-ए-आज़म(1960):- इस चित्रपट में लता जी ने कुल आठ (चार एकल/एक युगल/तीन समुह) गीत गाएं, सर्वश्री नौशाद अली के संगीत निर्देशन में। इस चित्रपट में लता द्वारा गाए गए कुछ सदाबहार शास्त्रीय संगीत पर आधारित गीत है- 'मोहे पनघट पे नंदलाल'(पीलू), 'जब प्यार किया तो'(भीमप्लासी), 'बेकस पे क़रम कीजिये'(केदार), 'तेरी महफिल में' (दरबारी/ शमशाद और अन्य साथी) आदि। अन्य और भी बहुत सी शास्त्रीय प्रधान फिल्मों में गीत गाएं जिसका उल्लेख करना यहां संभव नहीं हैं।

हिंदी चित्रपटों में गज़ल 'रस्में उल्फत को निभाएं तो निभाएं कैसे' (1973/दिल की राहें) और कव्वाली 'जानेमन एक नजर देख लो' (1963/मेरे महबूब) आदि, के अलावा लता जी ने लोकधुनों पर आधारित चित्रपटीय गीत भी गाए। जो काफी लोकप्रिय हुए। जैसे चित्रपट 'गौदान' (1963) का एक गीत जो भोजपुरी लोकधुन पर आधारित हैं गीत के बोल हैं- 'चली आज गोरी पिया की नगरिया', 'लम्हें'(1991) का एक गीत जो राजस्थानी लोकधुन पर आधारित बहुत ही सुंदर रचना है गीत हैं- 'मोरनी बागां मां बोले आधी रात मां' (इला अरूण के साथ) यह गीत अभिनेत्री 'श्रीदेवी' और 'अनिल कपूर' पर फ़िल्माया गया था। इस गीत को सुनकर आज भी श्रोता नाचने लगते हैं। 'रुदाली'(1993) का एक गीत 'दिल हूम हूम करे घबराए' (आसाम की लोक धुन पर आधारित) संगीतकार भूपेन हजारिका के साथ गाया। गढ़वाली (कुमाऊँ) लोकधुन में बंधा एक बहुत ही खुबसूरत गीत 'ओ दइया रे दइया चढ़ गयो पापी बिच्छुआ' चित्रपट 'मधुमती' (1958) सलील चैधरी के संगीत निर्देशन में गाया। ऐसी एक और सुंदर रचना उत्तर प्रदेश की लोकधुन में बंधा 'तीसरी कसम' (1966/शंकर-जयकिशन) का गीत 'ढूँढों-ढूँढों रे साजना'। पंजाब की लोकधुन में बंधा एक गीत जिसे अपने संगीत से सजाया संगीतकार 'लक्ष्मीकांत-प्यारेलाल' ने। गीत हैं- 'अब चाहे मां रूठे या बाबा मैंने तेरी बांह पकड़ ली' (प्रतिज्ञा/1975/किशोर कुमार) इत्यादि और ना जाने कितने लोकगीतों पर आधारित गीतों को लता ने अपनी सुरीली आवाज से सजाया एवं संवारा हैं।[11]

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

लता की अंतिम फ़िल्म ‘पैराशूट’(2011) थी जिसे संगीतकार शमीर टंडन ने अपने संगीत से सजाया था गीत के बोल हैं- ‘तेरे हंसने से मुझको आती है हंसी’। इस प्रकार लता जी ने अपने 66 वर्षों के (1945-2011) सांगीतिक सफ़र में हर प्रकार के गीत गाएं हैं। उनके द्वारा गाए गए गीत एक अलग ही मुकाम रखते हैं जिनकी कोई बराबरी नहीं कर सकता। स्वर कोकिला लता मंगेशकर को उनके बेमिसाल उपलब्धियों एवं अतुलनीय योगदान के लिये समय-समय पर प्रसिद्ध संस्थाओं द्वारा भी सम्मानित किया जा चुका हैं। उन्होंने हिंदी में ‘लेकिन’ और मराठी में चित्रपट ‘आई’ का निर्माण भी किया है। लता जी ने 2000 चित्रपटों के लिए गाने गाए हैं। कहा जाता हैं कि, लता जी ने दो हजार फिल्मों के लिए 7000 के करीब गानों में, 3500 से अधिक एकल और युगल गीत गाए हैं। युगल गीत जो उन्होंने गाए हैं वे अधिकांश पार्श्व गान करने वाले मुकेश, मो. रफी, किशोर कुमार, मन्नाडे जैसे गायकों के साथ गाए हैं। इसके अतिरिक्त जो संगीतकार-गायक हैं, उनके साथ भी गाया है जैसे-सी. रामचंद्र, हेमंत कुमार इत्यादि।[12]

लता मंगेशकर पाँचवे दशक से लेकर नौंवे दशक तक हिंदी चित्रपट जगत में सक्रिय रही। नब्बे के दशक के बाद लता ने धीरे-धीरे स्वयं ही गाना कम कर दिया ताकि आगे आने वाले नये कलाकारों को भी अवसर मिल सके। 6 फरवरी, 2022 को ये चिरनिंद्रा में लीन हो गई। लता मंगेशकर हर संगीतप्रेमी एवं उनके प्रषंसकों के दिलों में मरते दम तक जीवित रहेंगी। हर दिल पर राज करने वाली स्वर कोकिला को हम शत्-शत् नमन करते हैं।

गीतादत्त

गीतादत्त का मूल नाम गीताराय था। जो 1950 से 1970 के दशक तक चित्रपट जगत में बतौर पार्श्व गायिका के रूप में छायी रही। उनको गाने का अवसर सर्वप्रथम धार्मिक चित्रपटों के संगीतकार पं. हनुमान प्रसाद ने ‘भक्त प्रहलाद’ (1946) में दिया। इस चित्रपट में उन्हें एक समुह गान ‘सुनो सुनो हरि की लीला सुनाएँ’ गाने का मौका मिला। इस प्रकार गीता राय ने केवल 16 साल की उम्र में ही पार्श्वगायन के क्षेत्र में कदम रख दिये थे। इस चित्रपट के पश्चात् गीताराय गायन के क्षेत्र में खुल कर अपनी प्रतिभा दिखाने लगीं। 1947 में ही गीता ने चित्रपट ‘दिल की रानी’ में नायिका मधुबाला के लिए ‘क्यूं बालम हमसे रूठ गए’, तथा ‘बिगड़ी हुई तकदीर मेरी आके बनादे’ जैसे दिलकश गीत गाए।

एस.डी.बर्मन के बाद 1952 में संगीतकार ओ.पी.नेय्यर ने गीता गेय की आवाज़ से प्रभावित होकर चित्रपट ‘आसमान’ में उन्हें चार एकल गीत गाने का मौका दिया। उनके संगीत-निर्देशन में गीता को एक नई रोशनी मिली। अगले वर्ष उन्होंने निर्माता-निर्देशक गुरुदत्त से विवाह कर लिया और गीताराय से गीतादत्त बन गई।

1946 से लेकर 1971 तक गीतादत्त चित्रपटों में गाती रहीं। इस तरह गीता दत्त ने अपने 25 साल के सांगीतिक सफ़र में बहुत खूब गाया और बहुत से नामी संगीतकारों के निर्देशन में गाया, जैसेः- हेमंत कुमार, खेमचंद्र प्रकाश, बसंत देसाई, रोशन, मदन मोहन, सरदार मलिक, जयकिशन, मुकुल रोए, अविनाश व्यास, गुलाम हैदर, रवि शर्मा, अरूण कुमार और एन. दत्ता आदि। लेकिन सबसे अधिक और यादगार गीत उन्होंने सचिन देव बर्मन के संगीत निर्देशन में गाए।[13]

‘मेरा दिल जो मेरा होता, पलकों से पकड़ लेती’, इस गीत को चित्रपट ‘अनुभव’(1971) में अभिनेत्री तनुजा के लिए संगीत निर्देशक ‘‘कनु राय’’ के निर्देशन में गाया उनका अंतिम गीत था और उसके अगले वर्ष करीब एक साल बाद 20 जुलाई, 1972 को वह सब संगीत प्रेमियों को छोड़कर हमेशा-हमेशा के लिए चली गई। गीता दत्त की आवाज़ में लता की आवाज़ का माधुर्य, आशा की आवाज की भावुकता और शमशाद बेगम की आवाज के कंपन का अदभुत सम्मिश्रण था जो उनके बाद किसी पार्श्वगायिका में देखने को नहीं मिला। गायन शैली के विभिन्न स्वर गीता के गले में

थे। वह हर तरह के गीतो को इतनी खूबी और मार्मिक ढंग से गाया करती थीं कि कहना असंभव है कि वह किन-किन गीतों में श्रोताओं के अति निकट पहुंचीं और किन में नहीं। गीता दत्त हमारे लिए एक यादगार हैं। जब वह जीवित थीं तब भी संगीतकारों ने उन्हें याद किया और आज भी करते हैं। दरअसल, एक जमाने में वह चोटी पर थीं। हैरानी की बात तो यह है कि उनहोंनें नूरजहाँ, शमशाद और सुरैया के बीच रह कर अपनी जगह बनाई, और यही नहीं, अपनी गायन शैली को इस तरह कायम रखा कि आज भी श्रोता जहां कहीं भी उनके गायन को सुनते हैं, मंत्र मुग्ध हो जाते हैं और अपनी खोई हुई गीता की आवाज को फिर से याद कर लेते हैं।[14]

अपने सांगीतिक सफ़र में गीतादत्त जिन चित्रपटों में प्रमुख गायिका रही, उनमें- 'दो भाई'(1947/6 गीत/ 4 एकल/2 युगल), 'जोगन' (1950/7 एकल गीत), 'हर-हर महादेव' (1950/8 गीत/ 6 एकल/ 1युगल /1समुह/ अविनाश व्यास), 'बाजी' (1951/6 एकल गीत/ एस.डी.बर्मन), 'आर-पार' (1954/7 गीत/4 एकल/3 युगल/ ओ.पी.नेय्यर), 'मि.एंड.मिसेज 55' (1955)/6 गीत/3 एकल/3 युगल/ ओ.पी.नेय्यर), 'जान-पहचान' (1950/6 गीत/5 एकल/1 युगल/ खेमचंद्र प्रकाश), 'आनंद मठ'(1952/6 गीत/2 एकल/4 युगल/हेमंत कुमार), 'छूमंतर'(1956/5 गीत/3 एकल/2 युगल/ओ.पी.नेय्यर), 'आगरा रोड़'(1956/5 गीत/1 एकल/4 युगल गीत/रोशन), 'डिटेक्टिव'(1958/5 गीत/2 एकल/3 युगल/मुकुल रोए) इत्यादि हैं। गीतादत्त ने अपने समय में हर तरह के गीत गाए हैं उनके पाँच हजार से भी अधिक गाने रिर्कोड हुए हैं।[15]

आज जब भी दर्दीले गीतों की चर्चा होती है, तो गीता दत्त का नाम ही पहले जुबान पर आता है। गीता दत्त की आवाज में नशा, कशिश और एक दर्दपूर्ण कसक थी। सबसे बड़ी बात तो यह है कि नुकीला-विशिष्ट स्वर भी उनकी आवाज़ में था। यही वजह है कि संगीत प्रेमी आज भी उनको नहीं भूल पाएं है और न शायद कभी भूल पाएंगे। दर्दीले गीतों की गीता को हम शत-शत नमन करते हैं।

आशा भोंसले

आशा भोंसले जिन्होंने 1943 में संगीतकार दत्ता डावजेकर के निर्देशन में मराठी चित्रपट 'माझाबाल' से पार्श्र्वगायिका के रूप में अपना करियर शुरु कर के, आज भी इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। उन्होंने संगीत शिक्षा अपने पिता मास्टर दीनानाथ और प्रख्यात सरोद वादक उस्ताद अली अकबर खां साहब से ली थी।

हिंदी चित्रपट में उन्होंने पहली बार हंसराज बहल के संगीत निर्देशन में गाया 'चुनरिया'(1948) में। इस चित्रपट में आशा भोंसले को पार्श्वगायिका गीताराय व जोहराबाई के साथ एक समुह गान 'सावन आया रे' गाने का मौका मिला। लेकिन आशा जी ने इस गीत में मात्र एक पंक्ति 'बहना खुश होके सगुन मनाए' गाई थी। संगीतकार हंसराज बहल ने अपने संगीत से सजी चित्रपट 'रात की रानी' (1949) में 'हैं मौज में अपने बेगाने' तथा 'हमारे दिल पर तेरा इख्तीयार होना था' ये दो गीत गाने का मौका दिया। यह आशा जी का हिंदी चित्रपट में गाया पहला एकल गीत था। जिस समय आशा भोंसले ने हिंदी चित्रपटों में गाना प्रारंभ किया उन दिनों इनकी बड़ी बहन लता मंगेशकर, गीता दत्त और शमशाद बेगम का बड़ी-बड़ी चित्रपटों और लोकप्रिय अभिनेत्रियों पर फिल्माएं जाने वाले गानों पर एकाधिकार-सा था, इसलिये आशा भोंसले को वे गीत तथा चित्रपट में गीत गाने को मिलते थे जो इन लोकप्रिय गायिकाओं द्वारा छोड़ दी या अस्वीकार कर दिये जाते थे। यह स्थिति उनके हिंदी चित्रपट में प्रवेश से लेकर वर्ष 1955 तक बनी रहीं यानि लगभग आठ वर्षों तक। यद्यपि इस बीच उन्होंने गीत तो बहुत गाए,लेकिन पहचान एवं लोकप्रियता इतनी नहीं मिल पाई।

फिर वर्ष 1956 में संगीतकार ओ.पी. नैय्यर ने अपनी संगीत निर्देशित चित्रपट 'हम सब चोर हैं' में आशा जी से सात गीत गवाए और कई लोकप्रिय गीतों की रचना की। इस चित्रपट में उन्होंने अपनी षोख और चुलबुली आवाज़ में 'बेईमान बालमा मान भी जा', 'गुड़िया तेरे राज में बाजे बाजा', 'अंटम फंटम छोड़दे बाबु', 'हो गई तेरी हार', तथा 'ओ मिस्टर बेंजो इशारा तो समझो' जैसे गीत गाएं और सफलता हासिल की। चित्रपट 'हम सब चोर हैं' के बाद आशा जी ने बी. आर. चैपड़ा की फ़िल्म 'नया दौर'(1957) के लिए गीत गाए। इस चित्रपट के संगीत निर्देशक भी ओ.पी.नैय्यर थे। इस चित्रपट में गाए युगल गीतों ने इतनी लोकप्रियता प्राप्त की, कि आशा को प्रथम श्रेणी की गायिकाओं की पंक्ति में ला बैठाया। यह उनकी पहली बड़ी सफलता थी। इस चित्रपट में गाए कई गाने जो बहुत लोकप्रिय हुए जैसे 'मांग के हाथ तुम्हारा', 'उड़ें जब जब जुल्फें तेरी' (कव्वाली), 'साथी हाथ बढ़ाना', 'रेशमी सलवार कुरता जाली का'(कव्वाली/ शमशाद बेगम के साथ) आदि।[16]

संगीत निर्देशक एस.डी.बर्मन ने अपनी पसंदीदा गायिका लता के बाद आशा से कई चित्रपटों में गीत गवाएं। जो काफी लोकप्रिय हुए। जैसे -'काला पानी' (1958/2 युगल/तीन एकल) 'इंसान जाग उठा'(1959) इस चित्रपट के सभी गीत उन्होंने गाएं (3 एकल/ 3 युगल)। 'लाजवंती' (6 एकल / 1 युगल)। सुजाता (1959/2एकल/1 युगल), 'तीन देवियाँ'(1965/1 युगल), 'बंदिनी' (1963/ 2 एकल) और 'ज्वेल थीफ'(1967/दो एकल) आदि हैं। इस चित्रपटों में गाए कुछ गीत बहुत लोकप्रिय हुए। 'अच्छा जी में हारी पिया, चलो मान जाओ ना' (काला पानी/मो. रफी) यह गीत अभिनेत्री मधुबाला पर फिल्माया गया था। 'तुम जियो हजारों साल'(सुजाता), और अभिनेत्री तनुजा पर फिल्माया गया 'रात अकेली है बुझ गए दिये' (ज्वैल थीफ)।

फिर संगीतकार एस.डी.बर्मन के बेटे आर.डी.बर्मन उर्फ पंचम दा ने उनके जीवन में नई सृजना और बाद में नए अधिकार के साथ प्रवेश किया। पंचम दा हर प्रकार का संगीत देने में दक्ष थे। उन्होंने आशा जी से रोमांटिक, कैबरे, राक, डिस्को, हिपाप और शास्त्रीय हर तरह के गीत गवाएं। 'तीसरी मंजिल'(1966), कारवाँ, हरे राम हरे कृष्णा, रात कली (1971), यादों की बारात(1973), शोले(1975) जैसी अनेक चित्रपट हैं। और 'इजाजत' (1988/चार एकल) फिल्म के गीत प्यार की एक अलग परिभाषा देते हैं। इस चित्रपट में गाए गीतों ने आशा भोंसले को 'बेस्ट सिंगर' का राश्ट्रीय पुरस्कार भी दिलवाया। उक्त कुछ चित्रपटों में आशा जी ने पंचम दा के साथ युगल गीत भी गाए। जैसे- 'पिया तू अब तो आजा'(कारवाँ/कैबरे गीत), 'दम मारो दम' (हरे राम हरे कृष्णा/हिपाप), 'चुरा लिया है तुमने'(यादों की बारात/ डिस्को गीत) आदि हैं।

आशा भोंसले की प्रतिभा को निखारने वाले संगीतकार ओ.पी.नैय्यर के बाद संगीत निर्देशक खय्याम जी ऐसे दूसरे संगीतकार थे जिन्होंने आशा जी की गायन प्रतिभा को पहचाना। आशा जी ने इनकी प्रथम चित्रपट 'बीवी' के लिए गाया। आशा जी ने उपरोक्त संगीत निर्देशकों के अलावा और भी बहुत से संगीतकारों के लिये गीत गाऐं हैं जैसेः- लक्ष्मीकांत प्यारेलाल, सी.रामचंद्र, नौशाद, रवीन्द्र जैन, एनदत्ता ,हेमंत कुमार, जतिन ललित, बप्पी दा, कल्याण जी आनंद जी, चित्रगुप्त एवं रोशन, मदन मोहन, सलिल चैधरी, ए.आर.रहमान आदि शामिल हैं।

वर्ष 1995 में संगीतकार ए.आर.रहमान की संगीतबद्ध 'रंगीला' चित्रपट आई। जिसमें आशा जी ने एक युवा अभिनेत्री उर्मिला मातोंडकर के लिये गीत गाकर संगीत प्रेमियों को आश्चर्य चकित कर दिया था। इस चित्रपट में गाए गीतों ने यह साबित कर दिया था कि इतनी उम्र होने के बाद भी उनकी आवाज़ में वही कशिश कायम है। जो पिछले चार दशको में

उनके द्वारा गाए गीतों में सुनने को मिलती आ रही हैं। इसके गीत हैं- ‘तन्हा तन्हा यहाँ पे जीना’ तथा ‘हो जा रंगीला रे’ आदि।[17]

इसके पश्चात् और भी कई चित्रपट आए जैसे दौड़(1997), ताल, तक्षक(1999), फ़िज़ा(2000), लगान, प्यार तूने क्या किया(2001), मेरे यार की शादी है, कंपनी, फिलहाल(2002), बाल गणेश(2007), मिस्टर वाइट मिस्टर ब्लैक, 1920,(2008), माई(2013) इस चित्रपट में आशा जी ने माँ की भूमिका भी निभाई हैं। ब्लैक होम(2015), बेगम ज़ान(2017), सांड की आँख(2019) आदि। इन सभी चित्रपटों में गाए गीतों ने बता दिया कि आशा की आवाज़ आज भी जवान है और उसमें श्रोताओं को मोहित करने वाला जादू आज भी बरकरार हैं और अभी भी आशा भोंसले इस क्षेत्र में सक्रिय हैं। और नयी युवा पीढ़ी को भी उन्होंने अपने गीतों से प्रभावित किया हैं।

उन्होंने अब तक के अपने सांगीतिक सफ़र में चित्रपटीय गीतों के अतिरिक्त पाप, गजलों, भजन, परम्परागत भारतीय शास्त्रीय गायन, लोकगीत, कव्वालियां, रवींद्र संगीत आदि विभिन्न शैलियों में पारंगत होने की छाप छोड़ी है। एक ही आवाज़ में इतने सारे रूपों की उपस्थिति हमें एक सुखद विस्मय से भर देती है।

चित्रपट जगत में बहुमूखी गायिका के रूप में जाने जानी वाली पार्श्व गायिका आशा भोंसले ने अब तक के अपने सांगीतिक सफर में लगभग 950 फ़िल्मों में 13000 से भी अधिक गीत गाए हैं। उन्होंने हिंदी के अलावा अन्य 13 भाषाओं जैसे-तेलगु, मराठी, बंगाली, गुजराती, पंजाबी, तमिल, अंग्रेजी, रशियन, रूसी, जेक, नेपाली, उर्दू, मलय तथा मलयालम में भी गीत गाएं हैं।[18] आशा को इनके द्वारा गाए गए गीतों के लिये सात बार सर्वश्रेष्ठ गायिका का फ़िल्म पुरस्कार और अन्य पुरस्कारों से भी नवाज़ा जा चुका है।

उक्त गायिकाओं द्वारा गाए गए शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय विधाओं पर आधारित कुछ प्रमुख गीत इस प्रकार हैं-

1. कोई दुनियां में हमारी तरह (भैरवी)/प्यार की जीत (1948)/सुरैया/हुस्नलाल भगतराम
2. बिगड़ी बनाने वाले (काफी/कहरवा)/बड़ी बहन (1949)/सुरैया/हुस्नलाल भगतराम
3. घूँघट के पट खोल रे (दरबारी कान्हड़ा/कहरवा)/जोगन (1950)/गीतादत्त/ बुलो.सी.रानी
4. कभी आर कभी पार (पीलू/कहरवा)/आर-पार (1953)/शमशाद बेगम/ओ.पी.नैयर
5. काहे जादू किया मोहे(भैरवी/दादरा)/नगमा(1953)/शमशाद बेगम/नौशाद
6. मेरी वीणा तुम बिन रोए(अहीर भैरव/कहरवा)/देख कबीरा रोया(1957)/लता मंगेशकर/मदन मोहन
7. पी के घर आज प्यारी दुल्हनियाँ(पीलू/दीपचंदी)/मदर इंडिया(1957)/शमशाद एवं अन्य साथी/नौशाद
8. एहसान तेरा होगा मुझ पर(यमन,यमन कल्याण/कहरवा) /जंगली(1961)/आशा भोंसले/षंकर-जयकिशन
9. काहे तरसाये जिया(कलावती/तीनताल)/जंगली(1961)/आशा,उषा मंगेशकर/रोशन
10. तेरा मन दर्पण कहलाये(दरबारी कान्हड़ा/कहरवा)/काजल(1965)/आशा भोंसले/रवि शर्मा
11. बिंदिया चमकेगी(काफी/कहरवा)/दो रास्ते(1969)/लता मंगेशकर/लक्ष्मीकांत प्यारे लाल

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

12. रैना बीती जाए(मियां की तोड़ी/कहरवा,धुमाली)/अमर(1971)/लता मंगेशकर/आर.डी.बर्मन

इस प्रकार इन संगीत निर्देशकों एवं पार्श्व गायिकाओं ने चित्रपट संगीत के माध्यम से कितनी सुंदरता और दक्षता से साधारण जनता को शास्त्रीय एवं उपशास्त्रीय संगीत का दिग्दर्षन करवाया। कई शास्त्रीय प्रधान चित्रपटों को तो राष्ट्रीय स्तर पर पुरस्कृत भी किया गया।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचन से जो बातें उजागर होती हैं उनके आधार पर संक्षेप में कहा जा सकता हैं कि वर्ष 1950 के दशक में चित्रपटीय गायन शैली अब और परिष्कृत होकर परिपक्व हो रही थी। रिर्काडिंग तकनीक में सुधारों के कारण गायिकाओं को अपनी स्वभाविक आवाज़ व मनचाहे अंदाज में गाने की सुविधा मिली। कुछ गायिकाओं पर यद्यपि प्रारम्भ में कुछ स्थापित बड़ी गायिकाओं की गायन शैली का प्रभाव था। लता जी पर नूरजहां की गायकी का प्रभाव रहा और आशा भोंसले पर गीता की गायकी का, किंतु जल्द ही उन्होंने इससे मुक्त होकर अपनी स्वयं की मौलिक शैली विकसित कर ली थी। सुरैया को छोड कर लगभग सभी गायिकाएं शास्त्रीय संगीत में कुशल थी तथा पार्श्व गायन के क्षेत्र में आने से पूर्व संगीत की पर्याप्त तालीम हासिल कर चुकी थी। सभी का संगीत साधना में विश्वास था। हर गायिका की आवाज़ और गाने का अंदाज अलग-अलग था। गाना सुनकर गायिका को तुरन्त पहचाना जा सकता था। प्रत्येक की आवाज़ में एक विशिष्टता थी और यही कारण है कि कुछ गायिकाएं किन्हीं विशेष अभिनेत्रियों के लिए उपयुक्त समझी जाने लगी थी इन प्रमुख गायिकाओं ने अविस्मरणीय योगदान देकर चित्रपट संगीत के अत्यंत सुरीले और विविधता भरे युग की रचना की जिसे आज स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है। इनमें से अधिकांश गायिकाओं ने तो काफी लम्बे समय तक पार्श्व गायन के क्षेत्र में आधिपत्य जमाए रखा। इन प्रमुख गायिकाओं ने अपने काम से जनमानस को यह विश्वास दिलाया कि बिना संगीत के चित्रपटों का कोई महत्व नहीं होता।

संदर्भ सूची

1. भवानीलाल भारतीय, 'क्या गायिकाएं थीं अमीरबाई, खुर्शीद और शमशाद', राजस्थान पत्रिका, जयपुर, 2 मई, 1998।
2. डा. सीमा जौहरी, भारतीय चलचित्र संगीत का इतिहास: राधा पब्लिकेशन्स, अंसारी रोड़,नई दिल्ली, प्र.सं 2012, (पृ.141)
3. अनिल भार्गव, स्वरों की यात्रा: वाड.मय प्रकाशन, जयपुर, प्र.सं 2010, (पृ.278)
4. हिन्दुस्तान हिंदी, 11 फरवरी, 2004, (पृ. 2)
5. सुरैया संगीत अंक, संगीतह पत्रिका अंक, जनवरी, 2008, (पृ.12)
6. दा हिंदुस्तान टाइम्स, 12 जून, 1998, (पृ.13)
7. स्वामी वाहिद काज़मी, 'लोक गीत संगीत ने सिनेमा में रंग भरे हैं',फ़िल्म संगीत इतिहास अंक, जनवरी-फरवरी 1998, (पृ.72)
8. अजय देशपांडे, हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत और हिंदी सिनेमा का सुनहरा ताना बाना, कालखंड 1920-60: सई देशपांडे, गांधी नगर, नागपुर, प्र.सं 2019, (पृ.197)
9. डा. लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत पत्रिका, मई, 2000, अंक 5, (पृ.42)
10. दैनिक भास्कर, 'नवरंग', वीरवार, 20 नवंबर, 2003
11. डा. लक्ष्मी नारायण गर्ग, संगीत पत्रिका, मार्च, 1998, अंक -3, (पृ.26)

Swar Sindhu: National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 | Volume 10, Issue 01, January-June 2022
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2022

12. स्व.पं. शंकरराव व्सास, संगीत कला विहार पत्रिका, संगीत के भारतरत्न, दिसंबर, 2001, (पृ.67)
13. जनसत्ता, 22 जुलाई, 2000
14. नवभारत टाइम्स, 6 सितम्बर 1996, (पृ.5)
15. लक्ष्मीनारायण गर्ग, संगीत पत्रिका, जून, 1996, अंक -6, (पृ.32)
16. दैनिक भास्कर 'नवरंग', वीरवार, 20 नवंबर, 2003
17. हिंदुस्तान, 'एक पूर्ण गयिका है आशा भोंसले', नई दिल्ली, शनिवार 4 सितंबर, 1993
18. संचिता सिंह, भारतीय फिल्मों में महिला किरदार: नीलकंठ प्रकाशन, महरौली, नई दिल्ली, प्र.सं 2014, (पृ.96)